Class 9th

पाठ २

ल्हासा की ओर

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न १- थोडला के पहले के आखिरी गावों पहुँचने पर भिखमंगें के वेश में होने के बावजुद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र भेष भी उन्हें उचित स्थान दिला नहीं सका| क्यों?

उत्तर- उन्हें रहने के लिए उचित स्थान इसी लिए नहीं मिला था क्योंकि वे शाम के समय पहुंचे थे| इस समय वहां के लोग मदिरा पीकर अपने होश-हवाश गवां बैठते है, उन्हें अच्छे बुरे की पहचान नहीं रहती है, उनकी मनोवृत्ति भी बदल जाती है| इसलिए उनके भद्र वेश में होने पर उन्हें उचित स्थान नहीं मिल सका था|

प्रश्न २- उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर- उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण वह लोग पिस्तौल , बन्दूक लिए फिरते थे| डकैत यात्रियों को मारकर उनका सामान लूट लेते थे| इस प्रकार यात्रियों में सदा अपनी जान-माल का भय बना रहता था कि न मालूम कब उन्हें लूट लिया जाये अथवा जान से मार दिया जायेगा|

प्रश्न ३-लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण बिछड़ गया?

उत्तर- लेखक का घोड़ा धीरे-धीरे चल रहा था और उसका घोड़ा अधिक सुस्त हो जाता था| जहाँ दो रास्ते फुट रहे थे वहां से बाये रस्ते पर जब लेखक डेढ़ मील चला गया तब उसे पता चला की वह गलत रास्ते पर जा रहा है, लङ्कोर का रास्ते दाहिने वाला था| तब लेखक लौटकर सही रास्ता पकड़ा| तब वह अपने साथियों से पिछड़ता गया|

प्रश्न ४- लेखक ने शेकर विहार में सुमति को यजमानों के पास जाने से रोका परन्तु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर- दूसरी बार लेखक ने सुमति को यजमानों के पास जाने से इसीलिए नहीं रोका क्योंकि वह एक मंदिर में उसे बुद्ध वचन की एक सौ तीन पोथियाँ मिल गयी थी| इनमें एक-एक पोथी पंद्रह-पंद्रह सेर से काम नहीं थी| वह इन पोथियों के पठन-पाठन में लीन हो गया था|

प्रश्न ४- अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाईयों का सामना करना पढ़ा?

उत्तर- लेखक को दुर्गम मार्ग की कठिन चढ़ाई चढ़नी पड़ी| डाकुओं-लुटेरों से बचने के लिए भिखमंगों के सामान टोपी उतारकर और जीभ निकालकर उनसे दया की भीख मांगते हुए पैसा माँगा| लेखक का घोड़ा बहुत सुस्त था जिस कारण वह अपने साथियों से पिछड़ गया| लेखक को सुमति के क्रोध का शिकार भी बनना पड़ा| भार वाहक न मिलने पर लेखक को अपना सामान अपने कंधे पर लादकर यात्रा करनी पड़ी और खाने-पीने का जो भी सामान मिला उसी में गुज़ारा करना पड़ा|

प्रश्न ६- प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत के आधार पर बताईये कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर- उस समय का तिब्बती समाज अंध विश्वाशों से जकड़ा हुआ था| लोग बौद्ध सन्यासियों के द्वारा दिए गए गंडे-तावीज़ों को अपनी रक्षा का आधार मानते थे| समाज में कानून व्यवस्था अत्यंत दयनीय स्थिति में थी लोग बन्दूक और पिस्तौल लेकर खुले आम घुमते थे| मार्ग में चोर-लूटेरों का डर रहता था और डकैत यात्रियों को मारकर लूटते थे| वह जाति-पाति, छुआ-छूत का भेद-भाव नहीं था| यात्रियों को आवास तथा खाने-पीने की सुविधा दी जाती थी|

प्रश्न ७ छात्र स्वयं करें (गृहकार्य)

रचना-अभिव्यक्ति

प्रश्न-८ सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले| इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व कि किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?

उत्तर - सुमति इस क्षेत्र के लोगों से अच्छी प्रकार से परिचित है| वहां के सभी लोग सुमति का आदर करते हैं| सुमति अपने यजमानों के लिए बोध गया से वस्त्र लेकर आते हैं| सुमति एक व्यवहार कुशल, मृदुभाषी और अच्छे सहयात्री के व्यक्ति है परन्तु सुमति बहुत जल्दी गुस्सा हो जाते हैं और समझाने पर जल्दी शांत भी हो जाते हैं|

प्रश्न ९- "हालांकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी ख्याल करना चाहिए था|" इस कथन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेश भूषा के आधार पर तय होते हैं| आपकी समझ में ये उचित है या अनुचित, विचार व्यक्त करें|

उत्तर- यह उचित नहीं है कि किसी की वेश भूषा कि आधार पर उस व्यक्ति कि सम्बन्ध में कोई धारणा बना ली जाये| सीधे साधे और स्वच्छ वेश भूषा वाला व्यक्ति भी अच्छा और संस्कारी हो सकता है| यह आवश्यक नहीं है कि बहुत अधिक कीमती और आधुनिक वेश भूषा वाला व्यक्ति ही श्रेष्ठ हो| महात्मा गांधी सामान्य वेश भूषा धारण करते हुए भी विश्व में श्रेष्ट व्यक्ति बन गए| शास्त्री जी सामान्य और सादगी वाले व्यक्ति भारत कि प्रधमंत्री बन गए| इस लिए किसी की वेश भूषा कि आधार पर हमे अचार- व्यवहार के तरीके तय नहीं करने चाहिए|